c. उत् 1) vehere, ferre. MAH. 1.4272.: स हि राज्यधुरं गुर्वीम् उद्वक्ष्यति कुलस्य नः; 3.335.: कृच्छ्राद् उद्वहते भारम्; HIT. 127.1. 2) curru vehere. RAGH. 7.32.: तम् उद्वहन्तम् पथि भोजकन्यां रुरोध राजन्यगणः; 7.67.: उदवहद् अनवद्याम्. 3) uxorem ducere. MAN. 3.4.10.11.7.77. — *Caus.* facere ut quis uxorem ducat. MAH. 1.3801.: भीष्मः खलु पितुः प्रियचिकीर्षया सत्यवतीम् मातरम् उदवाहयत् (v. MAH. 1.4039 sq.)

c. उत् praef. सम् 1) tollere, extollere, levare. MAH. 2.718. 2) uxorem ducere. R. Schl. II. 107.3.

c. उप advehere. MAH. 2.2064.: राजरथो य इह ऽस्मान् उपावहत्. 2) constituere. MAH. 2.2051.: उपोह्यमाने द्यूते.

c. उप praef. सम् समुपोढ (quod etiam ad ऊह् referri potest) 1) in ordinem redactus. R. Schl. II. 75.29.: सङ्ग्रामे समुपोढे (v. ऊह् praef. वि). 2) coërcitus, refrenatus. MAN. 6.41.: समुपोढेषु कामेषु.

c. नि 1) ferre, vehere, sustentare. GITA-GOV. 1.16.: जगन् निवहते ... कृष्णाय तुभ्यम् नमः. 2) advehere, apportare. RIGV. 116.1.: विमदाय जायाम् ... न्यूहतू रथेन.

c. निस् *Caus.* exequi, explere, *e. c. promissum.* HIT. 106.4.: स्वप्रतिज्ञातम् अधुना निर्वाहय.

c. प्र 1) trahere, vehere *currum.* R. Schl. II. 52.43. 2) ferre, vehere. BHATT. 3.54. 3) auferre. RIGV. 23.22.: इदम् आपः प्रवहत यत् किञ्चिद् दुरितम् मयि. — *Part. pass.* प्रौढ (pro प्रोढ e प्र + ऊढ) 1) adultus, altus. MEGH. 26.77. 2) arrogans, insolens, superbus. Lass. 85.10. — *Subst. f.* प्रौढा nupta, sponsa. (Cf. goth. *brûth*, germ. vet. *brût*, island. vet. *brûda*, nostrum *Braut.*)

c. प्र praef. अनु huc illuc curru vehere *alqm.* MAH. 3.13504.: स माम् अनुप्रावहत्.

c. वि uxorem ducere. MAH. 1.3384. — व्यूढ latus. N. 12.13.: व्यूढोरस्क (v. etiam ऊह् praef. वि).

c. वि praef. निस् evehere, exportare. MAH. 1.6257.

c. सम् vehere, trahere. Schl. I. 67.4.: नृणां शतानि पञ्चाशत् ... मञ्जूषाम् अष्टचक्रस्थां समूहुस् ते कथञ्चन; MAH. 3.13190.: चत्वारस् त्वां वा गर्दभाः संवहन्तु.

वह (r. वह् s. अ) 1) *Adj.* ferens, afferens. IN. 2.9. 2) *Subst. m.* fluctus. SA. 4.31. *in comp.* BAH.

वहिश्चर *Adj.* (e वहिस् extra et चर् iens) egrediens. DR. 6.15.

वहिष्कृत (extra-factus e वहिस् extra et कृत factus, v. *euph. r.* 79.) privatus. IN. 2.5.

वहिस् vel बहिस् *Praep. et Adv.* extra, foras. Lass. 44.4.: नगराद् बहिर् गते सति; HIT. 58.8.: मूषिको न बहिर् निःसरति. (Cf. slav. БЕЗЪ *bez* absque, nisi hoc, quod nunc magis mihi arridet, referendum est ad वि, sicut НИЗЪ *niz* deorsum ad नि.)

वह्नि *m.* (r. वह् s. *unâd.* नि) ignis. MAH. 1.2037.

1. वा 2. P. flare, spirare, *de vento.* N. 24.40.: ववौ च पवनः शुचिः; A. 4.51.: शीतन् तत्र ववौ वायुः. — वात *m.* ventus. A. 11.12.; deus venti. H. 1.34. (Cf. वै; goth. *VO* flare, spirare (*vaia, vaivô* v. gr. comp. 617.), *vinds*, Them. *vinda* ventus; germ. vet. *wa-dal* flabellum, *wat, wait, waiet, wahet* flat; slav. *vje-ja-ti* flare, *vje-tr* ventus; lith. *wējas* ventus; gr. ἄημι, ut videtur, ex ἀ-ϝημι = वामि praef. आ, ἀήρ; αὖρα ex ἄϝρα, οὖρος ex ὄϝρος; de αὔω v. वै; lat. ventus, aër aura; hib. *bad* ventus = वात, pers. *bâd*.)

c. निस् extingui, *de igne.* SAK. 91.11.: निर्वास्यतः प्रदीपस्य शिखा. *V.* निर्वाण. — *Caus.* extinguere *ignem.* MAH. 1.1608.: समिद्धं जातवेदसं वर्षैर् निर्वापयिष्यामो मेघा भूताः. — *V.* निर्वापन.

c. प्र *i. q. simpl.* R. Schl. II. 71.25.: प्रवाति पवनः श्रीमान्.

c. सम् id. MAH. 4.1288.

2. वा 10. *P.* (सुखाप्तिगतिसेवासु) voluptate frui; ire; colere.

3. वा *Adv.* 1) vel, *sicut Latinorum* ve *postponitur.* BR. 1.19.: वा-वा sive-sive (*entweder-oder*). N. 26.10. *Cum antecedente* अथ vel यदि *saepe ita construitur ut hae voces sensu vacent atque particulae* वा *solum ut fulcrum*